परमात्म ऊर्जा

बातें सभी स्पष्ट देनी हैं लेकिन स्नेह के साथ। स्नेहमूर्त होने से उन्हों को जगत् माता के रूप का अनुभव होगा। जैसे माँ बच्चे को भले कैसे भी शब्दों में शिक्षा देती है, तो माँ के स्नेह कारण वह शब्द तेज़ व कडुवे महसूस नहीं होते। समझते हैं- माँ हमारी स्नेही है, कल्याणकारी है। वैसे ही आप भले कितना भी स्पष्ट शब्दों में बोलेंगे लेकिन वह महसूस नहीं करेंगे। तो ऐसे दोनों स्वरूप की समानता की सर्विस करनी है, तब ही सर्विस की सफलता समीप देखेंगे। कहाँ भी जाओ तो निर्भय होकर, सत्यता की शक्ति स्वरूप होकर, ऑलमाइटी गर्वनमेंट के सी.आई.डी ऑफिसर होकर उसी नशे से जाओ। इस नशे से बोलो, नशे से देखो। हम अनुचर हैं- इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है, न कि छिपाना है। लेकिन दोनों रूपों की समानता चाहिए। किसको देखते हो वा कुछ सुनते हो तो तरस की भावना से देखते-सुनते हो या सीखने और कॉपी करने के लक्ष्य से सुनते-देखते हो? आजकल की जो भी अल्प सुख भोगने वाली आत्मायें प्रकृति दासी के शो में दिखाई देती हैं, उन्हों के शो को देखकर स्थिति क्या रहती है? यह आत्मायें इस तरीके व इस रीति-रस्म में, प्रकृति की दासी के रूप में स्टेज पर प्रख्यात हुई हैं, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए व हमें भी इन्हों के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए। यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कॉपी करते हैं? आपके आगे कितने भी पाम्प शो में आने वाली आत्माएं हों लेकिन होवनहार प्रत्यक्ष रूप के भिखारी हैं। इन सभी आत्माओं ने बापदादा के बच्चों से थोड़ी बहुत शक्ति की बूंदों को धारण किया है। आप लोगों के शक्ति की अंचली लेने से, आजकल इस अंचली के फल, प्रकृति दासी के फल रूप में देख रहे हैं। लेकिन अंचली लेने वाले को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं? प्रभावित। यह सभी थोड़े समय में ही आप लोगों के चरणों में झुकने के लिए तड़पेंगे। इसलिए स्नेह के साथ सर्विस का जोश भी होना चाहिए। जैसे शुरू में स्नेह भी था और जोश भी था। निर्भय थे, वातावरण व वायुमण्डल के आधार से परे। इसलिए एकरस सर्विस का उमंग और जोश था।

भंडारा-महा.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित शिव संदेश शोभा यात्रा में ब्र.कु. शालू बहन, ब्र.कु. टिनेश्वरी बहन, ब्र.कु. पायल बहन, ब्र.कु. सोनाली बहन, ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. गौरीशंकर भाई, ब्र.कु. शालिग्राम भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

कथा सरिता

एकाग्रता का महत्त्व

एक महिला हर रोज़ पूजा करने के लिए मंदिर में जाती थी। लेकिन वो अपनी पूजा सही से नहीं कर पाती थी। वो महिला एक दिन परेशान होकर मंदिर के पुजारी के पास जाती है और उनसे कहती है कि कल से मैं पूजा करने के लिए मंदिर में नहीं आऊंगी।

पुजारी ने उस महिला से पूछा कि क्यों? महिला ने उस पुजारी को कहा कि मैं हर रोज़ मंदिर में आती हूँ और देखती हूँ कि यहाँ लोग आते हैं और फोन से अपने व्यापार की बात करते हैं। कुछ लोग ने तो मंदिर को ही गपशप करने का स्थान बना दिया है और कुछ लोग तो भगवान की पूजा कम और पाखंड ज़्यादा करते हैं।

इन सब लोगों से डिस्ट्रैक्ट होकर मैं अपना मन पूजा में नहीं लगा सकती हूँ और इसलिए मैंने ये तय किया है कि मैं कल से मंदिर में नहीं आऊंगी। पुजारी ने उस महिला से पूछा कि आप अपना अंतिम निर्णय लेने से पहले क्या मेरे कहने पर एक काम कर सकती हो? महिला ने कहा कि जी ज़रूर आप बताइये मुझे क्या करना है।

पुजारी ने महिला से कहा कि आप एक गिलास में पानी भर लीजिए और 2 बार मंदिर परिसर के अंदर परिक्रमा लगाइये लेकिन शर्त यह है कि गिलास का पानी गिरना नहीं चाहिए। महिला ने कहा अच्छा ठीक है मैं वैसा करती हूँ। थोड़ी ही देर में महिला ने एक गिलास में पानी लेकर वैसा ही कर दिखाया। उसके बाद पुजारी ने महिला से पूछा कि क्या आपने मंदिर में किसी को फोन पर बात करते हुए देखा, किसी को पाखंड करते हुए देखा या फिर किसी को मंदिर में गपशप करते हुए देखा?

महिला ने पुजारी से कहा कि जी नहीं मैंने कुछ भी नहीं देखा। फिर पुजारी ने कहा कि जब आप परिक्रमा लगा रही थी तब आपका पूरा ध्यान गिलास पर ही था कि इसमें से पानी ना गिर जाये। इसलिए आपको कुछ भी नहीं दिखाई दिया।

इस गिलास की तरह ही आप अब से जब भी मंदिर में आयें तो अपना ध्यान सिर्फ भगवान में ही लगाना फिर आपको कुछ नहीं दिखाई देगा। आपको दूसरी चीज़ें तभी दिखाई देती हैं जब आप उन पर ध्यान देते हैं और अपने काम में एकाग्रता नहीं रखते हैं।

ज़िंदगी का नज़रिया

एक बार चार दोस्त अपने कॉलेज के प्रोफेसर से मिलने के लिए उनके घर पर जाते हैं। वो प्रोफेसर अब बूढ़े हो चुके थे। वो इन चारों दोस्त को एक साथ देखकर बहुत खुश हो जाते हैं। वो लोग कुछ देर बातें करते हैं। बातें करने के बाद प्रोफेसर उनके लिए चाय बनाने के लिए अंदर जाते हैं।

ये चारों दोस्त अपनी-अपनी परेशानियां एक-दूसरे को बताने लगते हैं। कोई बोल रहा है कि मेरी सेलरी बहुत कम है, तो फिर कोई ये बता रहा था कि मेरे पास कार नहीं है और एक दोस्त बता रहा था कि मुझ पर अब कर्जा बहुत बढ़ गया है।

वे सब अपनी लाइफ से खुश नहीं थे। प्रोफेसर अंदर से इन सबकी बातें बहुत ही ध्यान से सुन रहे थे। प्रोफेसर ने बाहर आकर 4 कप उन चार दोस्तों के सामने रखे।

उस चार कप में से एक कप सोने का था, दूसरा कप चांदी का था, तीसरा कप कांच का था और चौथा कप साधारण था। प्रोफेसर ने उन चारों दोस्तों को चाय लेने को कहा। तभी प्रोफेसर ने देखा कि सबसे पहले सोने का कप था वो एक दोस्त ने उठा लिया, उसके बाद दूसरे ने चांदी का कप लिया और तीसरे ने कांच का कप उठाया। जब आखिर में कोई च्वाइस ही नहीं बची थी तो वो चौथे दोस्त ने आखिरी कप ले लिया।

ये देखते हुए प्रोफेसर बहुत मुस्कुराने लगे तभी उन चारों ने प्रोफेसर से पूछा कि आप क्यों मुस्कुरा रहे हो? तभी प्रोफेसर ने बताया कि मैं जब चाय बना रहा था तभी आप लोगों की बातें सुन रहा था और मैंने इसलिए ही आपको चाय देने के लिए चार अलग-अलग कप रखे थे।

प्रोफेसर ने उनको समझाते हुए कहा कि ये चाय हमारे जीवन की तरह है और ये जो चाय के अलग-अलग कप हैं वो हमारे जीवन का केवल नज़रिया ही है। सबको पीना तो चाय ही है लेकिन किसी ने सोने का कप लिया तो किसी ने चांदी का।

हम ये चाय मिट्टी के कप में भी पी सकते हैं और यही चाय सोने के कप में भी पी सकते हैं। इस तरह जीवन भी एक चाय ही है जोकि सबका समान है। लोग सांसारिक चीज़ें जैसे कि अच्छी जॉब, अच्छी कार, बड़ा बंगला और आदि के पीछे भागते रहते हैं और अपना सारा जीवन दुःख में ही निकाल देते हैं। इन सबकी वजह से वो लोग अपनी जीवनरूपी चाय का आनंद ही नहीं उठा पाते हैं। क्या फर्क पड़ता है कि हम चाय मिट्टी के कप में पिएं या फिर सोने के कप में? आखिर हमें पीनी तो चाय ही है ना।

हमें अपना जीवन सांसारिक चीज़ों के मोह में बर्बाद नहीं करना चाहिए। ये बात सच है कि हमें अपना लक्ष्य पूरा करना चाहिए और उसमें अपना बेस्ट एफ्फर्ट देना चाहिए, पर ये बात भी सच है कि हमें अपने लक्ष्य को खुश रहकर ही पूरा करना चाहिए।

हमारी ज़िंदगी तभी अच्छी बन सकती है जब हम ज़िंदगी का नज़रिया अच्छा बना दें।